जयपुर ग्रामीण में कांग्रेस ने इज्जत बचाई, 11 में से 5 सीटें जीतीं

■ कांग्रेस ने आमेर, शाहपुरा, चौमूं, फुलेरा और बस्सी में विजय प्राप्त की, जबकि भाजपा झोटवाड़ा, दूदू, चाकसू, जमवारामगढ़, विराट नगर और कोटपूतली में जीती।

जयपुर 3 दिसंबर (का.प्र.)। जयपुर जिले की 19 में से 11 सीटें ग्रामीण क्षेत्र में आती है। इन ग्रामीण क्षेत्रों में कांग्रेस ने उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन करते हुए जीत दर्ज की है। कांग्रेस ने जयपुर ग्रामीण की 11 में से आमेर, शाहपुरा ,चोमू और फुलेरा सीट जीत दर्ज की। वही सात सीटों पर भाजपा का जीत हुई है।

जयपुर ग्रामीण में कांग्रेस ने जिन चार सीटों पर जीत दर्ज की है उनमें से तीन सीटों पायलट खेमे के नेताओं ने जीती है। इनमें आमेर से प्रशांत सहदेव शर्मा ,शाहपुरा से मनीष यादव और फुलेरा से विद्याधर सिंह चौधरी शामिल है, जिन्होंने जयपुर ग्रामीण की इन तीनों सीटों पर कांग्रेस के लिए जीत हासिल की है। जयपुर ग्रामीण की इन तीन सीटों के अलावा जो चौथी सीट कांग्रेस ने जीती है वह चोमू विधानसभा है जहां पर उम्मीद के विपरीत परिणाम आया है। माना जा रहा था कि जिस तरह से जाट उम्मीदवार के रूप में कांग्रेस की शिखा मील बराला चुनाव लड रही है, वही यादव छुट्टन लाल आरएलपी के टिकट पर लगातार दूसरी बार चुनाव लड रहे थे। ऐसे में माना जा रहा था कि रामलाल शर्मा चुनाव जीत सकते हैं ,लेकिन लगातार चल रहे उतार-चढ़ाव के बाद में आखिरकार कांग्रेस की शिखा मील बराला चोमू से ना सिर्फ चुनाव जीतने में सफल रही, बल्कि कांग्रेस का वह प्रयोग भी सफल रहा है, जिसमें उन्होंने पहली बार किसी जाट उम्मीदवार को टिकट देकर जीतने का सपना देखा था।

मतगणना के दौरान झोटवाडा विधानसभा सीट पर हमेशा की तरह ही ग्रामीण क्षेत्र में कांग्रेस उम्मीदवार अभिषेक चौधरी की बढ़त लगातार बनी रही,जैसे कि हमेशा रहती है। इसे देखकर कांग्रेस कार्यकर्ता शुरुआत में खुश होते दिखे,लेकिन जैसे ही बाहरवां दौर शुरू हुआ, उसके बाद में भाजपा उम्मीदवार राज्यवर्धन सिंह राठौर की बढ़त शुरू हुई, जो की 50000 से ज्यादा की जीत के बाद ही रुकी।

इन सीटों के अलावा दूदू और चाकसू में पहले से ही कांग्रेस की 40000 से ज्यादा की हर देखी जा रही थी और उसी के अनुरूप कांग्रेस के दोनों उम्मीदवार वेद प्रकाश सोलंकी और बाबूलाल नगर चुनाव हारे।

जमवारामगढ़ में पहले से ही माना जा रहा था कि जयपुर ग्रामीण जिला कांग्रेस के अध्यक्ष और विधायक गोपाल मीणा इस बार जमवारामगढ़ से बड़े अंतराल से चुनाव हारेंगे। जब अंतिम परिणाम आया तो गोपाल मीणा 40000 से ज्यादा मतों से चुनाव हार गए। विराट नगर में पहले से लग रहा था कि इस बार मुकाबला कड़ा होगा। ऐसे में कांग्रेस के इंद्राज गुर्जर और कुलदीप धनकड़ तो आमने-सामने थे ही,लेकिन कांग्रेस के बागी रामचंद्र सराधना आजाद समाज पार्टी के उम्मीदवार बन गए और 18000 से ज्यादा वोट ले गए और इतने ही वोटो से कांग्रेस के इंद्राज गुर्जर को हार झेलनी पड़ी। कोटपूतली में कांग्रेस उम्मीदवार मंत्री राजेंद्र यादव और भाजपा के हंसराज गुर्जर के बीच मुकाबला काफी कड़ा हुआ।

अंत में 300 से ज्यादा वोटो से बीजेपी सीट पर जीतने में सफल रही। बस्सी में मुकाबला कांग्रेस के लक्ष्मण मीणा और भाजपा चंद्र मोहन मीणा ने काफी नजदीकी रहा और यहां लक्ष्मण मीणा ने भाजपा के चंद्र मोहन मीणा को काफी नजदीकी मुकाबले करीब 6000 वोट से चुनाव हरा दिया।

विधानसभा चुनाव परिणाम 2023

मध्यप्रदेश

कुल	230
भाजपा	163
कांग्रेस	66
अन्य	1

छत्तीसगढ़

कुल	90
भाजपा	54
कांग्रेस	35
अन्य	1

तेलंगाना

कुल	119
कांग्रेस	64
बी.आर.एस.	39
भाजपा	8
अन्य	8

जयपुर शहर की 6 सीट भाजपा व 2 कांग्रेस ने जीती

■ तिवारी 18 राउंड में आगे रहे 19 में हार गए

■ खाचरियावास का बड़बोलापन गोपाल शर्मा के लिए वरदान साबित हुआ।

■ तमाम विरोध के बावजूद सीताराम अग्रवाल को टिकट देना कांग्रेस के लिए नुकसानदेह साबित हुआ।

■ दिया कुमारी ने विद्याधर नगर से भाजपा की सबसे बड़ी जीत प्राप्त की।

जयपुर 3 दिसंबर (का.प्र.)। जयपुर शहर की आठ विधानसभा सीटों पर जबरदस्त ध्रुवीकरण हुआ और उसका फायदा सीधे-सीधे भाजपा के पक्ष में गया और पार्टी ने 8 में से 6 सीटें खुद की झोली में डाली। हालांकि सबसे रोचक मुकाबला शहर की हवामहल विधानसभा सीट पर हुआ, जहां 19 राउंड की मतगणना में 18 राउंड तक कांग्रेस के आर.आर. तिवारी आगे रहे, लेकिन आखिरी राउंड की मतगणना में वे भाजपा के बल मुकुंद आचार्य से नौ सौ से ज्यादा वोटों से न्चुनाव हार गए।

जयपुर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "रोड शो" के बाद में कयास लगाया जा रहा था की जबरदस्त ध्रुवीकरण होगा।उम्मीद के मुताबिक ही हुआ। ध्रुवीकरण का फायदा जहां भाजपा को 6 सीटों पर हुआ, वहीं कांग्रेस को भी दो सीटों पर लाभ हुआ। किशनपौल तथा आदर्श नगर में अल्पसंख्यक समुदाय ने कांग्रेस उम्मीदवारों के पक्ष में जमकर वोट किया। यही दो सीटें कांग्रेस जीतने में सफल रही। किशनपोल में नजदीकी मुकाबले में अमीन कागजी और आदर्श नगर में रफीक खान लगातार दूसरी बार जीतने में सफल रहे। सिविल लाइंस में ध्रुवीकरण का फायदा भाजपा के पक्ष में गया, वहीं कांग्रेस के उम्मीदवार और मंत्री प्रताप सिंह के बयानों में जनता को अहंकार नजर आया और उसका नतीजा यह रहा कि गोपाल शर्मा भाजपा की ओर से 28000 वोटो से जीतने में सफल रहे। चारदीवारी के बाहर की सीटें पहले से ही भाजपा के पक्ष में मानी जा रही थी और उसी के अनुरूप परिणाम भी आए। विद्याधर नगर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा ने इस बार नरपत सिंह राजवी का टिकट काटकर राजसमंद की संसद दिया कुमारी को मैदान में उतारा। वहीं तमाम विरोध के बावजूद कांग्रेस ने सीताराम अग्रवाल को फिर से मैदान में उतारा। नतीजा यह निकला कि भाजपा जहां एकजुट हो गई ,वहीं कांग्रेस भिखर गई और राज्य की सबसे बड़ी जीत बीजेपी उम्मीदवार दिया कुमारी के हिस्से आई। उन्होंने कांग्रेस के सीताराम अग्रवाल को 71000 से ज्यादा मतों से चुनाव हराया। सांगानेर में भी 2018 में पुष्पेंद्र भारद्वाज 37000 वोटो से हारे थे, लेकिन इसके बावजूद कांग्रेस ने टिकट नहीं बदला, उन्हें फिर से मैदान में उतार दिया। वहीं भाजपा ने वर्तमान विधायक अशोक लाहौटी का टिकट काटकर संगठन के व्यक्ति भजनलाल को मौका दिया। नतीजा यह निकला कि भजनलाल शर्मा ने पुष्पेंद्र भारद्वाज को 48000 से मात दी।

बगरू में विरोध के बावजूद कांग्रेस ने टिकट नहीं बदला और वर्तमान विधायक गंगा देवी को फिर से मैदान में उतार दिया। वहीं भाजपा ने एक बार फिर कैलाश वर्मा को मौका दिया और कैलाश वर्मा ने इस मौके का फायदा उठाते हुए गंगा देवी के विरोध को अपने पक्ष में किया और 48000 से ज्यादा वोटो से जीत हासिल की। मालवीय नगर में कांग्रेस के पास ज्यादा ऑप्शन नहीं थे, ऐसे में पार्टी ने फिर से तीसरी बार डॉ अर्चना शर्मा को मौका दिया, लेकिन कांग्रेस पूरी तरह से अर्चना शर्मा के पक्ष में नहीं आई। ऐसे में भाजपा के कालीचरण सराफ ने अर्चना शर्मा को 34000 से ज्यादा मतों से हराते हुए सीट भाजपा की झोली में डाल दी।

अजमेर में संगठन की कमी के कारण हारी कांग्रेस

■ केकड़ी और ब्यावर को जिला बनाने के बाद भी कांग्रेस को जीत नहीं मिली

■ जिले में केवल किशनगढ़ में कांग्रेस प्रत्याशी जीता।

अजमेर, (कासं)। विधानसभा चुनाव 2023 में अजमेर में एक बार फिर कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया है। अजमेर जिले की आठ विधानसभा क्षेत्रों में से सिर्फ एक सीट पर कांग्रेस को जीत मिली है। वहीं सात सीटों पर भाजपा ने बाजी मारी है। जबकि अजमेर शहर की प्रमुख सीटों पर भाजपा के ही बागी उम्मीदवार पार्टी प्रत्याशियों को चुनौती दे रहे थे। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अजमेर को बड़ी सौगात देते हुए ब्यावर व केकड़ी को जिला बनाया था लेकिन मुख्यमंत्री के इस दाव का भी लाभ कांग्रेस को नहीं मिला। ब्यावर व केकड़ी की सीटों पर कांग्रेस की हार हुई है।

अजमेर उत्तर विधानसभा सीट पर परिवर्तन की मांग करते हुए भाजपा से बागी होकर चुनाव मैदान में उतरे ज्ञानचन्द्र सारस्वत भी देवनानी का विजयी रथ नहीं रोक सके। देवनानी पांचवी बार विजयी होने में कामयाब रहे वहीं दूसरी बार कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ रहे महेन्द्र सिंह रलावता को एक बार फिर हार का सामना करना पड़ा। ज्ञानचन्द्र सारस्वत के निर्दलीय चुनाव लड़ने से देवनानी को हार का खतरा मंडरा रहा था लेकिन अजमेर में अमित शाह की रैली के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं में एक नए जोश का संचार हुआ और इसके बाद संघ के कार्यकर्ताओं ने भी देवनानी के लिए डोर टू डोर कैम्पेन किया जिसका लाभ भाजपा को मिला। साथ ही कांग्रेस उम्मीदवार महेन्द्र सिंह रलावता का कमजोर चुनाव प्रबंधन व सचिन पायलट की अजमेर में सभा नहीं होना भी महेन्द्र सिंह रलावता के हार के कारण रहे। माना जा रहा था कि ज्ञानचन्द्र सारस्वत भाजपा उम्मीदवार वासुदेव देवनानी को नुकसान पहुंचाएंगे लेकिन जानकारों का मानना है कि सारस्वत को मिले 26 हजार से अधिक मतों से प्रतीत होता है कि सारस्वत ने भाजपा से ज्यादा कांग्रेस को नुकसान पहुंचाया है।

अजमेर दक्षिण में भाजपा प्रत्याक्षी अनिता भदेल व कांग्रेस प्रत्याशी दौपद्री कोली के बीच कड़ी टक्कर रही लेकिन दौपद्री कोली के साथ कार्यकर्ताओं व संगठन की कमी के चलते कड़े मुकाबले में हार का सामना पड़ा। अनिता भदेल ने दौपद्री कोली को 4446 वोटों से हराया।

भाजपा ने विधानसभा चुनाव में सांसदों को चुनावी मैदान में उतारने की रणनीति भी बनाई थी। इसी के तहत अजमेर लोकसभा क्षेत्र से सांसद भागीरथ चौधरी को किशनगढ़ सीट से चुनावी मैदान में उतारा गया और पिछला चुनाव भाजपा के टिकट पर लड़ने वाले विकास चौधरी का टिकट काट दिया गया जिसका खामियाजा भी भाजपा को उठाना पड़ा। विकास चौधरी ने टिकट कटने के बाद कांग्रेस का दामन थामा और कांग्रेस के टिकट पर चुनावी मैदान में उतरे और उन्होंने भाजपा के पुराने बागी सुरेश टांक को शिकस्त देकर कांग्रेस के खाते में कांग्रेस की खाते में एक मात्र सीट पर विजय दिलावाई। साथ ही सांसद भागीरथ चौधरी तीसरे नम्बर पर रहे।

वहीं अजमेर की सबसे हाट सीट केकड़ी में पूर्व चिकित्सा मंत्री रघु शर्मा व शत्रुधन गौतम के बीच सीधा मुकाबला था। मुख्यमंत्री ने केकड़ी में जिला अस्पताल सहित अनेक सौगातें दी थी। रघु शर्मा के प्रयासों से केकड़ी को जिला भी बनाया गया लेकिन केकड़ी के मतदाताओं ने कांग्रेस की सौगातों को नकारते भाजपा पर विश्वास जताया और भाजपा उम्मीदवार शत्रुघन गौतम विजयी हुए। चुनाव जीतने के बाद गौतम ने रघु शर्मा के बेटे पर तंज कसते हुए कहा कि केकड़ी की जनता केकड़ी मे सागर टैक्स से पीडित थी।

ब्यावर को जिला बनाने के बाद कांग्रेस उम्मीदवार पारसमल जैन मजबूत स्थित में दिख रहे थे लेकिन शंकर सिंह रावत की मगरा क्षेत्र में मजबूत पकड और ब्यावर को जिला बनाने के लिए लगातार विधानसभा में उठाई गई मांग शंकर सिंह रावत के काम आया और वह चुनाव जीते।

मसूदा विधानसभा सीट पर कांग्रेस की फूट और भाजपा द्वारा नए चेहरे को टिकट देने का लाभ मिला। कांग्रेस से बागी होकर चुनाव लड़ रहे वाजिद खान चीता ने कांग्रेस उम्मीदवार व सचिन पायलट के करीबी राकेश पारीख को करीब 23 हजार वोट नुकसान पहुंचाया। वहीं सचिन साखला ने 18 हजार से अधिक वोटों का नुकसान पहुंचाया। यहां भाजपा के वीरेन्द्र सिंह कानावत विजयी रहे। कानावत ने अजमेर जिले की सबसे बड़ी जीत दर्ज की। कानावत 26716 वोटों से विजयी रहे।

मेवाड़-वागड़ की 28 सीटों में से 17 सीटों पर भाजपा काबिज

कांग्रेस को मिली केवल सात सीटें, तीन पर भारतीय आदिवासी पार्टी (बाप) ने मारी एंट्री

■ उदयपुर शहर सीट पर सबसे कम मतदान लेकिन भाजपा के ताराचंद जैन सर्वाधिक मतों से जीते।

■ मावली विधानसभा सीट आखिरी तक रहा मुकाबला, अंत में जीते कांग्रेस के पुष्करलाल डांगी।

उदयपुर, 3 दिसम्बर, (कासं)। राजस्थान विधानसभा चुनाव की 199 सीटों पर मतगणना के बाद सत्ता परिवर्तन आगाज हो गया है। मेवाड़-वागड़ की 28 सीटों के परिणामों ने भी सभी को चौंका दिया है। भाजपा ने जहां इस इलाके से 17 सीटों पर अपना परचम फहराकर सत्ता तक पहुंचने की परम्परा को निभा दिया है वहीं कांग्रेस को 7 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा है। अपनी पहली ही एंट्री में भारतीय आदिवासी पार्टी (बाप) ने इलाके के राजनीतिक पंडितों को चौंका दिया है वहीं भाजपा के बागी ने जीत दर्ज करते हुए भाजपा को तीसरे स्थान पर धकेल दिया। वहीं जनजाति के संभाग में आरक्षित 16 सीटों में से 7 पर भाजपा, 6 पर कांग्रेस जबकि 3 पर भारतीय आदिवासी पार्टी (बाप) ने धमाकेदार कब्ज़ा किया है।

उदयपुर जिले के आठ विधानसभा सीटों की बात करें तो उनमें छह सीटों पर भाजपा व दो पर कांग्रेस ने जीत हासिल की है। उदयपुर शहर व उदयपुर ग्रामीण सीट पर तो भाजपा ने भारी मतों से जीत हासिल की। इस जिले की तीन विधानसभा मावली, गोगुन्दा व खेरवाड़ा सीटों पर कई बार उतार-चढ़ाव देखने को मिला। मावली सीट पर तो कांग्रेस प्रत्याशी पुष्कर डांगी केवल 1567 मतों से अपनी लाज बचा पाए। वहीं खेरवाड़ा सीट पर भी प्रत्येक राउंड में उथल-पुथल मची रही और आखिरी राउंडों में पूर्व मंत्री व कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दयाराम परमार बढ़त ली और आखिर में यह बढ़त 16,311 मतों तक पहुंच गई और वे विजयी बने। इधर, गोगुन्दा विधानसभा सीट पर पूर्व मंत्री मांगीलाल गरासिया अंत में अपनी लाज नहीं बचा पाये और आखिर में उन्हें भी हार का सामना करना पड़ा।

उदयपुर शहर सीट पर भाजपा प्रत्याशी ताराचंद जैन ने अप्रत्याशित जीत हासिल करते हुए कांग्रेस के प्रत्याशी राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रो. गौरव वल्लभ को 32771 मतों से परास्त किया। वहीं ग्रामीण सीट पर फूलसिंह मीणा का झलवा बरकरार रहा और उन्होंने अपनी जीत की हैट्रिक लगाई। इधर, वल्लभनगर जो कि हॉट सीट मानी जा रही थी वहीं त्रिकोणीय मुकाबला था। उदयलाल डांगी पहले राउंड से ही बढ़त बनाए हुए थे जो आखिरी राउंड तक बरकरार रही और उन्होंने कांग्रेस की प्रीति शक्तावत को 20060 मतों से हरा दिया। मावली विधानसभा सीट पर सबसे रोमांचक मुकाबला रहा। भाजपा के कृष्णगोपाल पालीवाल को पुष्कर डांगी के सामने कमजोर माना जा रहा था वहां पर हार-जीत का अंतर केवल 1567 मतों में ही रहा।

गोगुन्दा विधानसभा सीट पर कांग्रेस के मांगीलाल गरासिया व भाजपा के प्रताप भील के बीच मतगणना के दौरान कई बार उतार-चढ़ाव देखा गया। प्रताप भील ने भी इस सीट पर तीसरी बार जीत दर्ज कराते हुए अपनी हैट्रिक बनाई। सलूम्बर विधानसभा सीट पर कांग्रेस के कद्दावर नेता रघुवीर मीणा अपनी साख नहीं बचा पाए यहां भारतीय आदिवासी पार्टी (बाप) ने कांग्रेस का सारा समीकरण बिगाड़ते हुए यह सीट तीसरी बार भाजपा की झोली में डाल दी। यहां से भाजपा के अमृतलाल 14691 मतों से विजयी रहे। झाड़ोल सीट पर भाजपा ने बाबूलाल खराड़ी ने कांग्रेस के हीरालाल दरांगी को 6488 मतों से पराजित कर अपनी सीट को कायम रखा।

चित्तौड़गढ़ जिले में कांग्रेस अपना खाता नहीं खोल पाई यहां पर चार भाजपा व एक निर्दलीय के खाते में गई। चित्तौड़गढ विधानसभा सीट पर भाजपा के बागी निर्दलीय के रूप में चुनाव लड़े चन्द्रभान सिंह आक्या ने कांग्रेस के सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत को हराते हुए यहां भाजपा के नरपत सिंह राजवी को तीसरे स्थान पर धकेलते हुए उनकी जमानत जब्त करवा दी। जिले की कपासन सीट पर भाजपा के अर्जुनलाल जीनगर, बड़ीसादड़ी सीट पर भाजपा के गौतम दक, बेगूं में भाजपा के सुरेश धाकड़, निम्बाहेड़ा में भाजपा के श्रीचंद कृपलानी ने जीत हासिल की। निम्बाहेड़ा सीट पर गहलोत सरकार में मंत्री रहे उदयलाल आंजना को हार का मुंह देखना पड़ा।

राजसमंद विधानसभा की चारों सीटों पर भाजपा ने अपनी पकड़ कायम रखी। चारों सीटे भाजपा के खाते में गई। इस जिले की नाथद्वारा विधानसभा सीट पर मेवाड़ राजपरिवार के विश्वराज सिंह ने कांग्रेस के दिग्गज व विधानसभा स्पीकर डॉ. सीपी जोशी को मात दी। यहां पर भी कांटे की टक्कर देखी गई और आखिरी में विश्वराज सिंह विजयी रहे। राजसमंद सीट पर किरण माहेश्वरी की पुत्री दीप्ति माहेश्वरी ने अंत:विरोध के उपरांत भी 31 हजार से अधिक मतों से जीत हासिल कर अपनी सीट कायम रखी। कुंभलगढ़ सीट पर भाजपा के भाजपा के सुरेन्द्र सिंह राठौड़, भीम विधानसभा सीट पर भाजपा के हरिसिंह रावत ने जीत हासिल की। प्रतापगढ़ जिले में दो विधानसभा सीटों पर हुई मतगणना में एक पर भाजपा तो दूसरी सीट पर भारतीय आदिवासी पार्टी (बाप) ने कब्जा जमाया। इधर, वागड़ क्षेत्र के बांसवाड़ा जिले में पांच विधानसभा सीटों में से बांसवाड़ा, बागीदौरा, कुशलगढ़ व घाटोल सीटों पर कांग्रेस जबकि गढ़ ी विधानसभा सीट भाजपा के खाते में गई।

डूंगरपुर जिले की चौरासी व आसपुर सीट पर आदिवासियों ने अपने वोट बैंक में कब्जा जमाए रखा और दोनों सीटों पर नवगठित भारतीय आदिवासी पार्टी (बाप) ने कब्जा जमाया। चौरासी विधानसभा सीट पर बाप के राजकुमार रोत का परिणाम तो दोपहर 12 बजे के करीब ही आ गया और उन्होंने भारी मतों से 69166 वोट से जीत दर्ज की। आसपुर सीट भी बाप पार्टी के खाते में गई। वहीं डूंगरपुर विधानसभा सीट पर कांग्रेस के गणेश घोघरा ने 19 हजार से अधिक मतों से जीत दर्ज की। सागवाड़ा सीट पर भाजपा के शंकरलाल डेचा ने भारतीय आदिवासी पार्टी के मोहनलाल रोत को 11999 मतों से पराजित किया यहां कांग्रेस को तीसरे स्थान पर संतुष्ट होना पड़ा।

जादूगर की जादूगरी और तिलिस्म समाप्त: शेखावत

■ केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री बोले, जनता ने गहलोत जी की मुराद पूरी करते हुए कुर्सी उनसे छुड़वा दी।

जयपुर, 3 दिसम्बर (का.प्र.)। केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने राज्य में भाजपा की जीत पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि जादूगर की जादूगरी और तिलिस्म अब समाप्त हो गया है। जो अशोक गहलोत कहते थे कि "मुख्यमंत्री की कुर्सी उन्हें नहीं छोड़ रही", जनता ने उनकी मुराद पूरी करते हुए वह कुर्सी उनसे छुड़वा दी। शेखावत ने रविवार को राजस्थान के चुनाव परिणामों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि अशोक गहलोत कहते थे कि वे मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़ना चाहते हैं, लेकिन यह कुर्सी उन्हें नहीं छोड़ रही। इस चुनाव में जनता ने उनकी मुराद पूरी कर दी है और यह कुर्सी उनसे छुड़वा दी। अब जादूगर की जादूगरी और तिलिस्म खत्म हो गया। उन्होंने कहा कि एक साल पहले जब हमने जनाक्रोश यात्राएं निकाली थी और राजस्थान में घूमकर जनता के मन की थाह लेने की कोशिश की थी, तब ही यह स्पष्ट हो गया था कि जनता के मन में इस सरकार के प्रति आक्रोश का भाव है, सरकार भी मानती है कि वह मात्र संवैधानिक आयुष्य पूरा कर रही है। परिवर्तन यात्रा के समय में भी जिस तरह जनता का रुख देखने को मिला, उस समय भी लग गया था कि राजस्थान में प्रचंड बहुमत से भाजपा की सरकार बनेगी।

शेखावत ने कहा कि पी.एम. नरेन्द्र मोदी की नीतियों, उनके द्वारा दिए गए स्वच्छ शासन और जनता के उनके ऊपर अटूट भरोसे को देखते हुए हम न केवल राजस्थान अपितु मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी सफल हुए। प्रधानमंत्री मोदीजी के नेतृत्व में हम सफल हुए। तीनों राज्यों में भाजपा की सरकार बनने के कारण भाजपा प्रचंड उत्साह में है। अभी विधानसभा चुनाव में भी जब जनता ने प्रधानमंत्री मोदी के चेहरे और काम को देखकर हमें जिताया है तो वर्ष 2024 तो उनका अपना चुनाव है, उसमें तो तीनों राज्यों में ही अपितु पूरे देश की जनता उन्हें तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए चुनाव करेगी।

कई नेताओं का हुआ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

■ रतन देवासी तथा समरजीत सिंह भी कई चुनाव हारने के बाद इस बार सफल हुए है।

और उस समय भैरों सिंह शेखावत के बुलाए जाने के बावजूद उनके साथ नहीं गए और कांग्रेस का साथ दिया था। उसके बाद से वह लगातार चुनाव लड़ते रहे और दो बार कांग्रेस ने उन्हें टिकट भी दिया, लेकिन वे चुनाव हार गए। इस बार भीमराज भाटी ने पाली में भाजपा के दिग्गज नेता और लगातार चुनाव जीत रहे ज्ञानचंद पारख को हराकर कांग्रेस के टिकट पर जीत हासिल की है। इसी तरह दिग्गज नेता हरेंद्र मिर्धा की भी लंबे समय बाद सदन में वापसी हुई है। 1998 में अशोक गहलोत के नेतृत्व वाली सरकार में मंत्री रहे हरेंद्र मिर्धा उसके बाद से लगातार चुनाव हार रहे थे। हाल ही कांग्रेस सरकार के दौरान हनुमान बेनीवाल के सांसद बनने के बाद खींवसर में हुए उपचुनाव में भी हरेंद्र मिर्धा चुनाव हार गए थे। इस बार कांग्रेस ने उन्हें नागौर से टिकट दिया था और उनके सामने कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुई ज्योति मिर्धा भाजपा की उम्मीदवार थी। वहीं कांग्रेस की ओर से टिकट नहीं मिलने पर पूर्व मंत्री हबीबुर रहमान बागी लड़ रहे थे। ऐसे में यहां इस बार उनका कड़ा मुकाबला था। इस मुकाबले में हरेंद्र मिर्धा ने जीत करते हुए न सिर्फ सदन में वापसी की, बल्कि उन्हें एक तरह से राजनीतिक जीवन दान भी मिल गया।

इसी तरह कांग्रेस में दो विधानसभा चुनाव और एक लोकसभा चुनाव हार चुके रतन देवासी को भी जीवन दान मिला है और वह रानीवाड़ा से जीतकर सदन में पहुंचने में सफल हो गए हैं। भीनमाल से समरजीत सिंह भी लगातार चुनाव हार रहे थे। ऐसे में उनके लिए भी यह चुनाव इस बार जीवन मरण का प्रश्न था, लेकिन समरजीत सिंह ने बहुत नजदीकी मुकाबले में जीत दर्ज करते हुए एक तरह से राजनीतिक वापसी की है।

इसी तरह लगातार दो चुनाव हार कर कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए रमेश खींची ने भी इस बार भाजपा के टिकट पर कठूमर से जीत हासिल करते हुए राजनीतिक वापसी कर ली है।

अब गहलोत ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सनक (ओबसैशन), जिसमें वे पायलट को सत्ता से बाहर रखने के लिये किसी भी हद तक जाते रहे।

गहलोत को सोते-जागते यह एक भयावह सपना रह-रह कर आता था कि सचिन पायलट उनकी सरकार को गिराने का प्रयास कर रहा है तथा जो भी उनकी बात सुनने को तैयार होता था, उसे वे यह बात पूरे विस्तार के साथ दोहराते थे। वे सार्वजनिक रूप से पायलट के खिलाफ अपशब्द बोलते थे, जिससे यह स्पष्ट संकेत जाता था कि कांग्रेस में गहरा विभाजन है।

हारने वालों में प्रमुख हैं- विधानसभा अध्यक्ष सी.पी. जोशी, मानवेन्द्र सिंह, दिव्या मदेरणा तथा उनके अधिकांश मंत्री। हारने वाले मंत्री हैं, भंवर सिंह भाटी, बी.डी. कल्ला गोविन्द मेघवाल, सुखराम बिश्नोई, रामलाल जाट, परसादी मीणा, उदयलाल आंजना, प्रताप सिंह, रमेश मीणा, ममता भूपेश, राजेन्द्र यादव, सालेह मोहम्मद, प्रमोद जैन भाया, शकुंतला रावत, जाहिदा खान, विश्वेन्द्र सिहं, भजनलाल जाटव, महेन्द्र चौधरी तथा अन्य।

राजस्थान में सत्ता से बाहर होना अशोक गहलोत के राजनीतिक कैरियर का अंत माना जा रहा है, क्योंकि केन्द्रीय नेतृत्व उन्हें राज्य अथवा केन्द्र में कोई भी पद अथवा पावर देने को तैयार नहीं है।

यह स्पष्ट है कि अशोक गहलोत राजस्थान में कांग्रेस का भूतकाल थे और सचिन पायलट को पार्टी का युवा, कर्मठ तथा करिश्माई चेहरा बना कर राज्य की राजनीति में अब बड़ी भूमिका देने में कोई अड़चन नहीं है।

तीन राज्यों में जीत, 2024 में हैट्रिक की गारंटी: मोदी

नयी दिल्ली, 03 दिसंबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तीन राज्यों मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत को 'ऐतिहासिक' एवं 'अभूतपूर्व' बताते हुये रविवार को कहा कि यह जीत सबका साथ, सबका विकास की भावना की जीत हुई है और इससे एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ है जिसने विकसित भारत की नींव को मज़बूत किया है। मोदी ने यहां पार्टी मुख्यालय पर भाजपा कार्यकर्ताओं के विजयोत्सव समारोह को संबोधित करते हुये पार्टी की जीत को माताओं, बहनों, युवा साथियों और गरीब परिवारों को समर्पित किया और कहा, मैं उनके निर्णय के सामने नतमस्तक हूं। आज की जीत ऐतिहासिक है। सबका साथ, सबका विकास की अनुभूति की जीत हुयी है। विकसित भारत की आवाज जीती है। आत्मनिर्भर भारत का संकल्प जीता है। प्रधानमंत्री ने इस तीन राज्यों की जीत को भ्रष्टाचार पर ईमानदारी की जीत और वर्ष 2024 में लोकसभा चुनावों में भाजपा की हैट्रिक की गारंटी भी करार दिया। उन्होंने कहा, मैं अपनी माताओं, बहनों, बेटियों के सामने, मैं अपने युवा साथियों के सामने, अपने किसान साथियों के सामने, मैं अपने गरीब परिवारों के सामने, उनके निर्णय के सामने नतमस्तक हूं।

कांग्रेस हारी,...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

से, रमेश मीणा सपोटरा से, प्रशांत बैरवा निवाई से, दानिश अबरार सवाई माधोपुर से , चेतन डूडी डीडवाना से, सुदर्शन सिंह रावत भीम से और धीरज गुर्जर जहाजपुर से चुनाव हार गए हैं।

झुंझुनूं में कांग्रेस का गढ़ बरकरार रहा

जिले की सात सीटों में 5 पर कांग्रेस जीती

■ संतोष अहलावत की करारी हार, श्रवण कुमार की जिले में सबसे बड़ी जीत

■ बृजेंद्र ओला ने तोड़ा मिथक, परिवहन मंत्री रहते चुनाव जीता।

झुंझुनूं, (निसं)। रविवार को झुंझुनूं जिले की सात विधानसभा सीटों पर हुए चुनाव परिणाम की मतगणना जिला मुख्यालय के सेठ मोतीलाल कॉलेज में सुबह 8 बजे शुरू की गई जिसमें सर्वप्रथम डाक मत पत्रों की गिनती हुई। झुंझुनू जिला कांग्रेस का गढ़ रहा है उसी के अनुरूप परिणाम दोहराते हुए 5 सीटों पर कांग्रेस और दो सीटों पर भाजपा की जीत हुई। लाल डायरी को लेकर चर्चित विधानसभा क्षेत्र उदयपुरवाटी का पेच अंतिम समय तक प्रशासन के लिए सर दर्द बना रहा। उदयपुरवाटी के 24 राउंड की गिनती संपूर्ण होने पर कांग्रेस के भगवाना राम सैनी 418 मतों से भाजपा प्रत्याशी शुभकरण चौधरी पर जीत दर्ज कर रहे थे। अपनी हार देखते हुए शुभकरण चौधरी ने डाक मत पत्रों की गणना दोबारा करने की मांग की जिस पर प्रशासन ने दोबारा डाक मत पत्रों की गणना की जिसमें शुभकरण चौधरी 153 मतों से हार रहे थे। वहीं देर रात पुन: काउंटिंग के बाद जारी परिणाम में कांग्रेस के भगवानाराम सैनी विजेता रहे। कांग्रेस के भगवानाराम सैनी ने भाजपा के शुभकरण चौधरी को 418 वोटों से हराया। लेकिन उन्होंने अपनी हार नहीं मानी और जिला निर्वाचन अधिकारी को पत्र सौंप कर रिकाउंटिंग की बात रखी।

प्रदेश में बनने वाली संभावित भाजपा सरकार के लिए झुंझुनू जिले से पहली बार नवलगढ़ से भाजपा का कमल का फूल खिलाने वाले विक्रम सिंह जाखल कांग्रेस के बड़े चेहरे लगातार नवलगढ़ से तीन बार चुनाव जीतने वाले डॉक्टर राजकुमार शर्मा को पराजित करने में सफल रहे। भाजपा के लिए जहां नवलगढ़ में कमल खिलना खुशी का इजहार है वहीं झुंझुनू सांसद नरेन्द्र कुमार का मंडावा विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस प्रत्याशी रीटा चौधरी से चुनाव हारना दुखदायी।

झुंझुनू विधानसभा सीट से लगातार तीन चुनाव जीतने के बाद बृजेंद्र ओला ने इस बार जीत का चौका लगाया। बृजेंद्र ओला को माना जाता है सचिन पायलट समर्थक हालांकि इस बार ओला की बढ़त पिछले चुनाव के बनिस्पत कम रही लेकिन जीत को रखा बरकरार। प्रदेश में परिवहन मंत्री रहते चुनाव हारने का मिथक बना हुआ था जिसे अब की बार झुंझुनू विधानसभा सीट से परिवहन सडक़ सुरक्षा मंत्री बृजेंद्र ओला ने जीतकर मिथक को धराशायी कर दिया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का शेखावाटी चुनावी सभा करना और प्रत्याशी का हारना नया मिथक बन गया। विदित रहे सन 2018 के विधानसभा चुनाव में पीएम मोदी शेखावाटी में सीकर जिले की लक्ष्मणगढ़ और झुंझुनू जिले में खेतड़ी चुनावी सभा करने आए थे। चुनाव परिणाम में लक्ष्मणगढ़ में भाजपा प्रत्याशी की हार हुई वहीं खेतड़ी में भी भाजपा प्रत्याशी को हार का मुंह देखना पड़ा था। इस बार हुए चुनाव में भी पीएम मोदी की शेखावाटी में दो चुनावी सभा चूरू जिले की तारानगर सीट जहां से नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ चुनाव लड़ रहे थे वहीं झुंझुनू विधान सभा सीट पर निषित कुमार उर्फ बबलू चौधरी भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित किया था और चुनाव परिणाम में दोनों ही भाजपा प्रत्याशियों पराजित हुए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का शेखावाटी दौरा नये मिथक को जन्म दे गया।

सूरजगढ़ विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी श्रवण कुमार की जिले में सबसे बड़ी जीत हुई है। श्रवण कुमार ने पूर्व सांसद और विधायक संतोष अहलावत को 37414 वोटों से करारी शिकस्त दी है वहीं बृजेंद्र ओला जिले में सबसे बड़े नेता बनकर उभरे हैं। बृजेंद्र ओला समर्थक पिलानी ए उदयपुरवाटी समेत स्वयं 28863 से बड़ी जीत के साथ झुंझुनू विधानसभा सीट से जीत का चौका लगाने में कामयाब रहे। ओला को इस वक्त जिले में कांग्रेस के बड़े नेता बनकर उभरे हैं ऐसा दिग्गजों का मानना है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादकः- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908